विषय : हिंदी द्वितीय भाषा (संयुक्त)

भाषाई कौशल/क्षेत्रः श्रवण **(पाठ्यक्रम)** **कक्षा–आठवीं**

अ क्र.	अध्ययन–अनुभव	अध्ययन–अध्यापन सामग्री	प्रतिक्रिया, उपयोजन, व्यावहारिक परिवर्तन	सतत सर्वंकष मूल्यमापन
	भाषाई खेल : 'पहेली' एक राजा की अनोखी रानी। दुम के मार्ग से पीती पानी। (दीये की बाती)	* संदर्भ साहित्य	* विद्यार्थी कक्षा में पहेलियाँ सुनता–सुनाता है। * खेल में रुचि लेता है।	* प्रात्यक्षिक * निरीक्षण
१.	कविता, शौर्य गीत सुनना–सुनाना। (देशप्रेम, बंधुभाव संबंधित)	* गीत, कविता चार्ट * रेडियो * दूरदर्शन * ध्वनिफीत * संगणक * सी. डी. * डी. वी. डी.	* कविता, शौर्यगीत सुनने सुनाने में रुचि लेता है। * सुनने की एकाग्रता बढ़ती है। * प्रयाणगीत एवं शौर्य गीत के माध्यम से वीरता साहस, निडरता एवं देशप्रेम की भावना विकसित होती है। * कविता के माध्यम से भावनाओं का समायोजन होता है। * तनावमुक्त होकर कविता श्रवण करते हुए रसास्वादन करता है। * शब्दसंपत्ति का विकास होता है। * सरल प्रश्नों के उत्तर देता है।	* कृति * निरीक्षण * कक्षाकार्य * सहपाठी मूल्यांकन
२.	ऐतिहासिक साहसकथा, जीवनी सुनना–सुनाना।	* कथा चार्ट तथा फोल्डर	* ऐतिहासिक साहसकथा एवं जीवनी सुनने–सुनाने में रुचि लेता है।	* प्रात्यक्षिक * निरीक्षण * कक्षाकार्य

अ क्र.	अध्ययन–अनुभव	अध्ययन–अध्यापन सामग्री	प्रतिक्रिया, उपयोजन, व्यावहारिक परिवर्तन	सतत सर्वंकष मूल्यमापन
		* सी. डी * डी. वी. डी. * संगणक * दूरदर्शन * रेडियो * ध्वनिफीत * चित्र (विभूतियों के) * संदर्भसहित्य	* विद्यार्थी में ध्यानपूर्वक सुनने की अभिरुचि जागृत होती है। * ऐतिहासिक महान विभूतियों की कथा एवं जीवनी से प्रेरणा ग्रहण कर उनके मार्ग पर चलने की ओर उन्मुख होता है। * अपनी सांस्कृतिक विरासत के प्रति गौरव महसूस करता है। * उपरोक्त संदर्भ में पूछे गए छोटे–छोटे प्रश्नों के उत्तर देता है।	* सहपाठी मूल्यांकन
३.	परिसर के महत्वपूर्ण स्थलों के बारे में सुनना–सुनाना। (परिसर एवं पर्यावरण के संरक्षण के विषय संदर्भ में)	* परिसर के महत्वपूर्ण स्थानों की सूची * परिसर के दर्शनीय स्थल एवं महत्वपूर्ण स्थलों के चित्र चार्ट। * रेडियो * दूरदर्शन * ध्वनिफीत * संगणक * सी. डी. * डी. वी. डी. * संदर्भसहित्य	* परिसर के ऐतिहासिक स्थल, विज्ञान केंद्र, सांस्कृतिक केंद्र, महत्वपूर्ण नदी, तालाब आदि के बारे में सुनने–सुनाने में रुचि लेता है। * उपरोक्त संदर्भ में एकाग्रतापूर्वक सुनने की रुचि बढ़ती है। * श्रवण के माध्यम से जल, ध्वनि, वायु प्रदूषण के कारण एवं उपायों सें अवगत होता है। * वृक्षारोपण एवं पशु–पक्षियों के संरक्षण की भावना जागृत होती है। * स्वयं स्फूर्ति से आत्मविश्वास के साथ कक्षा में जानकारी सुनाता है।	* प्रात्यक्षिक * निरीक्षण * कृति * कक्षाकार्य * सहपाठी मूल्यांकन

अ क्र.	अध्ययन-अनुभव	अध्ययन-अध्यापन सामग्री	प्रतिक्रिया, उपयोजन, व्यावहारिक परिवर्तन	सतत सर्वंकष मूल्यमापन
४.	समाचारपत्र, प्रसंग, घटना एवं घोष वाक्य सुनना-सुनाना।	* समाचारप्रत्र * प्रसंग, घटना संबंधित चित्र एवं चार्ट। * घोषवाक्य पट्टी। * सी.डी. * डी.वी.डी. * दूरदर्शन * रेडियो * संदर्भ साहित्य	* विद्यार्थी विविध माध्यमों से समाचारपत्र, प्रसंग, घटना एवं घोष वाक्य सुनने-सुनाने में रुचि लेता है। * सुने हुए प्रसंग, घटना एवं घोष वाक्य अन्य विद्यार्थियों को सुनाता है। * सुनी हुई जानकारी से आपदा प्रबंधन के प्रति जागरूक होता है। * शब्द संपत्ति का विकास होता है। * सुने हुए विषयों पर पूछे गए प्रश्नों का उत्तर देता है।	* प्रात्यक्षिक * निरीक्षण * कृति * कक्षाकार्य * सहपाठी मूल्यांकन
५.	* पहेलियाँ, नाट्यांश सुनना-सुनाना। * १ से १०० तक के अंकों को सुनना-सुनाना।	* पहेलियों के लिखित चार्ट * अंक चार्ट * सी. डी. * डी. वी. डी. * दूरदर्शन * रेडियो आदि * संदर्भ साहित्य	* पहेलियाँ, नाट्यांश सुनने-सुनाने में रुचि लेता है। * १ से १०० तक के अंकों को सुनने में आनंद लेता है। * कौतुहल जागृत होता है। * सुनी हुई बातों को दोहराता है।	* प्रात्यक्षिक * कृति * निरीक्षण * कक्षाकार्य

भाषाई कौशल/क्षेत्र : भाषण – संभाषण **कक्षा–आठवीं**

अ क्र.	अध्ययन–अनुभव	अध्ययन–अध्यापन सामग्री	प्रतिक्रिया, उपयोजन, व्यावहारिक परिवर्तन	सतत सर्वंकष मूल्यमापन
	भाषाई खेल : 'आस–पास की दुनिया' (कृति–आठ से दस विद्यार्थियों के गुट बनाना। अलग–अलग पर्चियों को 'क्रिकेट, फुटबॉल, हॉकी, कबड्डी, सर्कस, सब्जीमंडी, मेला, जंगल' लिखकर एक जगह पर रखना' गुट प्रमुख द्वारा एक पर्ची उठाना। पर्ची में लिखे गए विषय के बारे में गुट के प्रत्येक विद्यार्थी द्वारा एक–एक वाक्य बोलकर वाक्य शृंखला बनाना।)	✻ खेल की अलग–अलग पर्चियाँ	✻ विद्यार्थी रुचि लेते हुए भाषाई खेल में सहभागी होता है। ✻ विषय के अनुसार सोचकर एक–एक वाक्य बनाकर बताता है। ✻ विविध विषयों की जानकारी प्राप्त करता है। ✻ अपने पूर्व अनुभव या जानकारी का उपयोग करते हुए खेल में शामिल होता है।	✻ प्रात्यक्षिक ✻ कृति ✻ निरीक्षण ✻ मौखिक कार्य
१.	राज्य, देश, का परिचय बताना। (खान–पान, आवास, त्योहार, पोशाक, संस्कृति)	✻ प्रांत, राष्ट्र का मानचित्र ✻ ग्लोब (पृथ्वीगोल) ✻ संदर्भित चित्र	✻ अपने प्रांत, देश के खान–पान, आवास, संस्कृति त्योहार के बारे में आपस में चर्चा करता है। ✻ भाषण प्रतियोगिता में सहभागी होता है। ✻ अपनी सांस्कृतिक विरासत के प्रति आदर महसूस करता है। ✻ राष्ट्रीय संपत्ति के संरक्षण की भावना एवं विश्व बंधुत्व का भाव विकसित होता है।	✻ मौखिक कार्य ✻ प्रात्यक्षिक ✻ निरीक्षण ✻ कृति ✻ कक्षाकार्य ✻ सहपाठी मूल्यांकन

अ क्र.	अध्ययन–अनुभव	अध्ययन–अध्यापन सामग्री	प्रतिक्रिया, उपयोजन, व्यावहारिक परिवर्तन	सतत सर्वंकष मूल्यमापन
२.	दिए गए विषय पर पक्ष–विपक्ष में चर्चा करना। (परीक्षा, दूरदर्शन, संगणक, विज्ञान–वरदान, भ्रमण ध्वनि, संयुक्त परिवार, शिक्षा अधिकार आदि।)	* संदर्भित विषयों के चित्र–चार्ट।	* विद्यार्थी दिए गए विषयों के बारे में चिंतन–मनन करता है। चर्चा में सहभागी होता है। * विचार एवं तार्किक क्षमता में वृद्धि होती है। * भाषण प्रतियोगिता में सहभागी होता है। * अपनी बात दृढ़तापूर्वक रखने की क्षमता विकसित होती है और आत्मविश्वास बढ़ता है। * विश्लेषण क्षमता में अभिवृद्धि होती है।	* मौखिक कार्य * प्रात्यक्षिक * कृति * निरीक्षण * कक्षाकार्य * सहपाठी मूल्यांकन
३.	बातचीत में मुहावरे और कहावतों का प्रयोग करना।	* मुहावरों एवं कहावतों का अर्थ सहित चार्ट।	* मुहावरों और कहावतों का अर्थ समझता है। * अपनी औपचारिक, अनौपचारिक बातचीत में मुहावरों और कहावतों का प्रयोग करता है। * प्रभावी भाषण–संभाषण करने की ओर उन्मुख होता है। * रचनात्मकता की ओर उन्मुख होता है।	* मौखिक कार्य * प्रात्यक्षिक * कृति * निरीक्षण * कक्षाकार्य * सहपाठी मूल्यांकन
४.	दोहे (नीतिपरक), प्रयाणगीत, बोधकथा की हाव–भाव, लय, गति से प्रस्तुति करना। १ से १०० तक के अंकों का शुद्ध उच्चारण करना।	* संदर्भ साहित्य * कविता, प्रयाणगीत बोधकथा के चार्ट एवं कथाचित्र। * अंकों के अक्षरों में लिखे चार्ट। * सी. डी. * डी. वी. डी. * दरदर्शन * संगणक * संदर्भ साहित्य	* सरल स्पष्ट उच्चारण एवं हाव–भाव लय गति के साथ दोहे प्रयाणगीत, बोधकथा की प्रस्तुति करता है। * शुद्ध उच्चारण करते हुए दैनिक व्यवहार में अंकों का उपयोग करता है। * दोहों के माध्यम से भावनाओं एवं तनाव का समायोजन होता है। * प्राचीन हिंदी काव्य से परिचित होता है।	* मौखिक कार्य * प्रात्यक्षिक * कृति * निरीक्षण * कक्षाकार्य * सहपाठी मूल्यांकन

अ क्र.	अध्ययन–अनुभव	अध्ययन–अध्यापन सामग्री	प्रतिक्रिया, उपयोजन, व्यावहारिक परिवर्तन	सतत सर्वंकष मूल्यमापन
५.	आरोह–अवरोह, तान–अनुतान एवं बलाघात की ओर ध्यान देते हुए बातचीत करना।	* सी. डी. * डी. वी. डी. * रेडियो * ध्वनिफीत आदि। * संदर्भ साहित्य	* विद्‌यार्थी वर्ण, शब्द के मानक उच्चारण के प्रयोग से अवगत होता है। * बातचीत करते समय विराम चिह्न भावानुसार आरोह–अवरोह, तान–अनुतान, बलाघात पर ध्यान देता है। * भाषण–संभाषण करने में आत्मविश्वास पैदा होता है। * बातचीत में अपने विचार एवं भावों के उचित संप्रेषण की क्षमता में वृद्‌धि होती है।	* मौखिक कृति * प्रात्यक्षिक * निरीक्षण * कक्षाकार्य * सहपाठी मूल्यांकन

भाषाई कौशल/क्षेत्र : वाचन **कक्षा–आठवीं**

अ क्र.	अध्ययन–अनुभव	अध्ययन–अध्यापन सामग्री	प्रतिक्रिया, उपयोजन, व्यावहारिक परिवर्तन	सतत सर्वंकष मूल्यमापन
	* **भाषाई खेल :** **'वाचन की डगर पर शब्दों का सफर'** कृति : किन्हीं वाक्यों के अलग–अलग शब्द और विराम चिह्नों के काईस विद्यार्थियों के गले में लटकाना। उनका उचित क्रम लगाते हुए अर्थपूर्ण वाक्य बनाकर वाचन करना।	* शब्दकार्ड * विराम चिह्न के संकेतों के कार्ड	* विद्यार्थी खेल में रुचि लेता है। * अर्थपूर्ण पाठ्येत्तर वाचन में अभिरुचि बढ़ती है। * निर्णयक्षमता में वृद्धि होती है। * रचनात्मकता का विकास होता है।	* कृति * प्रात्यक्षिक * निरीक्षण * सहपाठी मूल्यांकन
१.	विज्ञान कथा का वाचन करना–कराना।	* वैज्ञानिकों के चित्र * विद्यार्थी कोना * संदर्भ साहित्य	* हाव–भाव के साथ वाचन करता हैं। * विज्ञान कथा के वाचन में रुचि बढ़ती है। * उचित गति के साथ प्रकट एवं मौन वाचन करता है। * वैज्ञानिक दृष्टिकोण का विकास होता है। * शुद्ध एवं निर्दोष वाचन की ओर उन्मुख होता है।	* कृति * प्रात्यक्षिक * निरीक्षण * कक्षाकार्य * सहपाठी मूल्यांकन

अ क्र.	अध्ययन–अनुभव	अध्ययन–अध्यापन सामग्री	प्रतिक्रिया, उपयोजन, व्यावहारिक परिवर्तन	सतत सर्वंकष मूल्यमापन
२.	जिला, राज्य के पर्यटन स्थलों की सामग्री का वाचन करना–कराना।	* मानचित्र * महत्वपूर्ण स्थलों के चित्र * महत्वपूर्ण स्थलों की जानकारी संबंधी चार्ट * सी.डी. * डी.वी.डी.	* विद्यार्थी अपने जिले एवं राज्य के महत्वपूर्ण स्थलों की उपलब्ध सामग्री का वाचन करता है। * स्पष्ट, शुद्ध मुखर वाचन एवं मौन वाचन की ओर प्रवृत्त होता है। * आकलन क्षमता बढ़ती है। * अपनी ऐतिहासिक एवं सांस्कृतिक विरासत के प्रति गर्व महसूस करता है। * इन स्थलों के संरक्षण की भावना विकसित होती है।	* मौखिक कार्य * प्रात्यक्षिक * कृति * निरीक्षण * कक्षाकार्य * स्वाध्याय * सहपाठी मूल्यांकन
३.	महान विभूतियों, शहीदों की जीवनी का वाचन करना।	* महान विभूतियों एवं शहीदों के चित्र * उनकी जीवनी के चार्ट * संदर्भ साहित्य	* महान विभूतियों एवं शहीदों की जीवनी के वाचन में रुचि लेता है। * वाचन के विषयों पर पूछे गए प्रश्नों के उत्तर देता है। * महान विभूतियों एवं शहीदों की जीवनी से प्रेरणा प्राप्त कर सन्मार्ग एवं सदाचार के मार्ग पर चलने की ओर प्रवृत्त होता है * राष्ट्रप्रेम और राष्ट्रीय एकात्मता की भावना विकसित होती है। * नैतिक एवं मानवीय मूल्यों का विकास होता है।	* मौखिककार्य * प्रात्यक्षिक * कृति * निरीक्षण * कक्षाकार्य * स्वाध्याय * सहपाठी मूल्यांकन

अ क्र.	अध्ययन–अनुभव	अध्ययन–अध्यापन सामग्री	प्रतिक्रिया, उपयोजन, व्यावहारिक परिवर्तन	सतत सर्वंकष मूल्यमापन
४.	बाल किशोर साहित्य का आरोह – अवरोह के साथ वाचन करना। * १ से १०० तक के अक्षरों में लिखे अंकों का वाचन करना।	* संदर्भ साहित्य * बालगीत, किशोर कथा आदि का संग्रह। * अक्षरों में लिखे अंकों के कार्ड एवं चार्ट।	* विद्‌यार्थी बाल/किशोर साहित्य का आवश्यकतानुसार उचित आरोह–अवरोह तान–अनुतान, हाव–भाव तथा लय–ताल के साथ वाचन करता है। * पूरक वाचन में रुचि लेता है। * पढ़े गए विषयों पर आधारित पूरक वाचन करता है। * पढ़े गए संदर्भो के पात्रों के साथ सहसंबंध स्थापित होता है। * १ ते १०० तक के अक्षरों में लिखे अंकों का वाचन करता है। * व्यावहारिक जीवन में इन अंकों का प्रयोग करता है।	* मौखिक कार्य * प्रात्यक्षिक * कृति * निरीक्षण * कक्षाकार्य * स्वाध्याय * सहपाठी मूल्यांकन
५.	यात्रा वर्णन, संस्मरण का वाचन करना–कराना।	* संदर्भ साहित्य	* यात्रावर्णन, संस्मरण के वाचन में रुचि लेता है। * पूरक वाचन की ओर अन्मुख होता है। * वाचन के आधार पर पूछे गए प्रश्नों के उत्तर देता है। * आदर्श वाचन प्रतियोगिता में शामिल होता है।	* निरीक्षण * मौखिक कार्य * कक्षाकार्य * सहपाठी मूल्यांकन

भाषाई कौशल/क्षेत्र : लेखन

कक्षा–आठवीं

अ. क्र.	अध्ययन–अनुभव	अध्ययन–अध्यापन सामग्री	प्रतिक्रिया, उपयोजन, व्यावहारिक परिवर्तन	सतत सर्वंकष मूल्यमापन
	✻ **भाषाई खेल :** **उलट–फेर** : कृति : दिए गए शब्दों, वर्णों की मात्राओं का उलट–फेर करके नए अर्थपूर्ण शब्द बनाकर लिखना। उदाहरण : कान – नाक रोज – जोर साहस – सहसा मीन – नीम	✻ शब्द कार्ड	✻ वर्णों एवं मात्राओं के उलट–फेर करके नए अर्थपूर्ण शब्द बनाकर लिखता है। ✻ जिज्ञासावृत्ति का विकास होता है। ✻ शब्द संपदा का विकास होता है। ✻ सुडौल, सुपाठ्य, निर्दोष लेखन की ओर उन्मुख होता है।	✻ मौखिक कार्य ✻ प्रात्यक्षिक ✻ कृति ✻ निरीक्षण ✻ कक्षाकार्य ✻ सहपाठी मूल्यांकन
१.	**अनुलेखन** – सुलेखन, श्रुतलेखन करना (परिच्छेद)	✻ परिच्छेद चार्ट ✻ संदर्भ साहित्य	✻ परिच्छेद के अनुलेखन, सुलेखन, शुद्ध लेखन में रुचि लेता है। ✻ लेखन में विराम चिह्नों का प्रयोग करता है। ✻ लेखन प्रतियोगिता में सहभागी होता है।	✻ प्रात्यक्षिक ✻ निरीक्षण ✻ सहपाठी मूल्यांकन ✻ सहपुस्तक मूल्यांकन ✻ कक्षाकार्य ✻ स्वाध्याय
२.	**शुद्ध लेखन करना** (नाट्यांश, यात्रा वर्णन आत्मकथा आदि) १ से १०० तक के अंकों का अक्षरों में लेखन करना।	✻ संदर्भ साहित्य	✻ स्वयंस्फूर्ति से नाट्यांश, यात्रावर्णन, आत्मकथा आदि का लेखन करता है। ✻ अंकों का सही लेखन करता है। ✻ अंकों का दैनिक व्यवहार में प्रयोग करता है।	✻ प्रात्यक्षिक ✻ निरीक्षण ✻ सहपाठी मूल्यांकन ✻ सहपुस्तक मूल्यांकन ✻ कक्षाकार्य ✻ स्वाध्याय

अ क्र.	अध्ययन-अनुभव	अध्ययन-अध्यापन सामग्री	प्रतिक्रिया, उपयोजन, व्यावहारिक परिवर्तन	सतत सर्वंकष मूल्यमापन
३.	**अन्य विधाओं का लेखन :** (कहानी, छोटी कविता, भाषण नमूना आदि) (ईमानदारी, व्यसनमुक्ति, अहिंसा, संवेदनशीलता संबंधी)	* अपूर्ण कविताओं का चार्ट * अपूर्ण कहानियों के चार्ट * भाषण के विषय के चार्ट	* विद्यार्थी अपूर्ण कविताओं, कहानियों, भाषण को अपने शब्दों में पूरा करता है। * सृजनशीलता का विकास होता है। * लेखन में पूर्व परिचित उद्धरण, मुहावरे, कहावतें आदि का प्रयोग करते हुए प्रवाहमय लेखन की ओर प्रवृत्त होता है। * भावनाओं का समायोजन होता है। * लेखन प्रतियोगिता में सहभागी होता है।	* कृति * निरीक्षण * कक्षाकार्य * स्वाध्याय * प्रकल्प
४.	**पठित, अपठित** गद्य-पद्य पर प्रश्न तैयार करके लिखना।	* गद्य-पद्य * परिच्छेद चार्ट्स * संदर्भ साहित्य	* प्रश्न निर्मिति कौशल विकसित होता है। * विचारशक्ति, तर्कशक्ति आदि गुणों का विकास होता है। * स्वयं तैयार किए गए प्रश्नों के उत्तर लिखता है। * विचार एवं लेखन में अचूकता, एकरूपता आदि की ओर उन्मुख होता है। * लघूत्तरी, वस्तुनिष्ठ प्रश्नों की रचना करता है।	* कृति * प्रात्यक्षिक * निरीक्षण * कक्षाकार्य * स्वाध्याय

अ क्र.	अध्ययन–अनुभव	अध्ययन–अध्यापन सामग्री	प्रतिक्रिया, उपयोजन, व्यावहारिक परिवर्तन	सतत सर्वंकष मूल्यमापन
५.	स्वयं स्फूर्त भाव से व्यावसायिक पत्र, निबंध, वृत्तांत, घटना आदि का लेखन करना।	चित्र, मुद्दों के चार्ट प्रसंग, घटना के उदाहरणों के चार्ट	❋ स्वयं स्फूर्त भाव से पत्र, निबंध, वृत्तांत घटना आदि का अपने शब्दों में लेखन करता है। ❋ विचारशक्ति, कल्पनाशक्ति का विकास होता है। ❋ आपदा–प्रबंधन संबंधी सजगता पैदा होती है। ❋ पत्रलेखन से मित्रों सहपाठियों एवं रिश्तेदारों से आत्मीयता बढ़ती है।	❋ प्रात्यक्षिक ❋ निरीक्षण ❋ कक्षाकार्य ❋ स्वाध्याय ❋ सहपुस्तक कसौटी ❋ पुस्तक

अ क्र.	अध्ययन–अनुभव	अध्ययन–अध्यापन सामग्री	प्रतिक्रिया, उपयोजन, व्यावहारिक परिवर्तन	सतत सर्वंकष मूल्यमापन
	* **भाषाई खेल :** **''खेल–खेल में खोज''** कृति : विभिन्न प्रकार के शब्द। शब्द चित्र के माध्यम से संज्ञा, सर्वनाम, विशेषण, क्रिया का वर्गीकरण करना।	* शब्द चित्र कार्ड * चित्र * वाक्य पट्टी	* रुचिपूर्वक खेल–खेल के माध्यम से संज्ञा, सर्वनाम, विशेषण, क्रिया को पहचानता है। * खेल के माध्यम से तनाव का समायोजन होता है।	* प्रात्यक्षिक * निरीक्षण * कक्षाकार्य
१.	**पुनरावृत्ति** (विकारी शब्द, शब्दों का लिंग, वचन आदि) शब्दभेद – अविकारी शब्दों के भेद (सामान्य परिचय)	* वाक्य पट्टियाँ * विभिन्न शब्दों के चार्ट	* पिछली कक्षा में पढ़े हुए घटकों की पुनरावृत्ति में रुचि लेता है। * शब्दों का लेखन, भाषण–संभाषण में प्रयोग करता है। * अविकारी शब्द भेदों के प्रयोग के माध्यम से परिचित होता है। * भाषण, लेखन में अविकारी शब्दों का प्रयोग करता है। * शब्द संपदा बढ़ती है। * रचनात्मकता का विकास होता है।	* प्रात्यक्षिक * मौखिककार्य * कक्षाकार्य * स्वाध्याय * सहपाठी मूल्यांकन * सहपुस्तक कसौटी
२.	प्रयोग के माध्यम से वाक्य में प्रयुक्त कर्ता, कर्म, क्रिया का स्थानसहित परिचय करना कराना।	* वाक्य पट्टियाँ * वाक्य तालिका * शब्दों के चार्ट * परिच्छेद के चार्टस्	* प्रयोग के माध्यम से वाक्य में आए हुए कर्ता, कर्म, क्रिया से परिचित होता है। * शुद्ध एवं मानक लेखन करने की ओर उन्मुख होता है।	* प्रात्यक्षिक * मौखिककार्य * निरीक्षण * कक्षाकार्य * स्वाध्याय * सहपाठी मूल्यांकन

अ क्र.	अध्ययन-अनुभव	अध्ययन-अध्यापन सामग्री	प्रतिक्रिया, उपयोजन, व्यावहारिक परिवर्तन	सतत सर्वंकष मूल्यमापन
३.	काल के भेद (उपभेदों सहित)	* काल भेद के चार्ट * काल भेदों के अनुसार वाक्य पट्टियाँ	* विद्यार्थी काल एवं उनके उपभेदों से अवगत होता है। * भाषण-संभाषण लेखन में काल एवं उनके भेदों का प्रयोग करता है। * वर्गीकरण एवं विश्लेषण की क्षमता विकसित होती है।	* कृति * कक्षाकार्य * स्वाध्याय * सहपाठी मूल्यांकन
४.	कृदंत, तद्धित का सामान्य परिचय प्रयोग के माध्यम से कराना।	* शब्द सारिणी * शब्द कार्ड * वाक्य पट्टियाँ	* कृदंत एवं तद्धित से प्रयोग के माध्यम से परिचित होता है। * भाषण-संभाषण, लेखन में प्रयोग करता है। * कृदंत, तद्धित की रचना करने में रुचि लेता है। * कृदंत, तद्धित के मूल शब्दों को अलग करने की क्षमता विकसित होती है।	* निरीक्षण * प्रात्यक्षिक * मौखिक कार्य * कक्षाकार्य * स्वाध्याय आदि
५.	मुहावरों, कहावतों का सार्थक वाक्यों में प्रयोग करना।	* मुहावरों, कहावतों का चार्ट * मुहावरों तथा अर्थों की तालिका * कहावतों की घटनाओं के चित्र अथवा वर्णन करनेवाले चार्ट	* मुहावरों, कहावतों का वाक्यों में सार्थक प्रयोग करता है। * मुहावरों, कहावतों से भाषण-लेखन को प्रभावी बनाने का प्रयास करता है।	* प्रात्यक्षिक लिखित, * मौखिक कार्य * निरीक्षण * कक्षाकार्य * स्वाध्याय * प्रकल्प

भाषाई कौशल/क्षेत्र : व्यावहारिक सृजन

अ. क्र.	अध्ययन–अनुभव	अध्ययन–अध्यापन सामग्री	प्रतिक्रिया, उपयोजन, व्यावहारिक परिवर्तन	सतत सर्वंकष मूल्यमापन
	※ **भाषाई खेल :** **मूक अभिनय** कृति : किसी कार्यक्रम या समारोह की पूर्व तैयारी हेतु की जानेवाली सभी कृतियों का मूक अभिनय (आंगिक अभिनय) करना।	※ कार्यक्रम समारोह के चित्र ※ कार्यक्रम समारोह के चार्ट ※ कार्यक्रम की तैयारी में की जानेवाली विभिन्न कृतियों की सूची	※ विद्यार्थी रुचिपूर्वक खेल में सहभागी होता है। ※ आत्मविश्वास में वृद्धि होती है। ※ निरीक्षण क्षमता विकसित होती है। ※ संदर्भानुसार सार्थक कृति करने की ओर अग्रसर होता है। क्रम बद्ध कृति करता है। ※ जीवन में अभिनय को व्यवसाय के रूप में अपनाने हेतु उन्मुख होता है।	※ कृति ※ प्रात्यक्षिक ※ निरीक्षण ※ कक्षा कार्य ※ सहपाठी मूल्यांकन
१.	**अनुवाद –** मातृभाषा के संवादों का हिंदी में अनुवाद कर लिखना।	※ वाक्य पट्टी ※ छोटे परिच्छेद का चार्ट	※ मातृभाषा के संवादों का हिंदी में मौखिक अनुवाद करने में रुचि लेता है। ※ मातृभाषा एवं हिंदी भाषा में सहसंबंध स्थापित करता है। ※ दैनिक व्यवहार में हिंदी के प्रयोग की ओर उन्मुख होता है।	※ मौखिक कार्य ※ प्रात्यक्षिक ※ कृति ※ निरीक्षण ※ कक्षाकार्य ※ सहपाठी मूल्यांकन
२.	**व्यावसायिक लेखन –** सम–सामायिक विषयों पर हास्य–व्यंग्य रेखाचित्र रेखन एवं लेखन करना।	※ समसामायिक विषयों के चित्र ※ समसामयिक विषयों के कार्ड एवं चार्ट।	※ हास्य व्यंग्य के विषयों में रुचि लेता है। ※ समसामायिक विषयों का हास्य व्यंग्य के रूप में रेखांकन एवं लेखन करता है। ※ सृजन एवं कल्पनाशीलता की अभिवृद्धि होती है। ※ जीवन में हास्य–व्यंग्य लेखन को व्यवसाय के रूप में अपनाने हेतु उन्मुख होता है।	※ कृति ※ प्रात्यक्षिक ※ निरीक्षण ※ कक्षाकार्य ※ स्वाध्याय ※ प्रकल्प

अ क्र.	अध्ययन–अनुभव	अध्ययन–अध्यापन सामग्री	प्रतिक्रिया, उपयोजन, व्यावहारिक परिवर्तन	सतत सर्वंकष मूल्यमापन
३.	**नाट्यकला –** कहानी का संवाद में रूपांतरण करना।	* संदर्भ साहित्य	* विद्यार्थी कहानी का संवाद में रूपांतरण करने में रुचि लेता है। * आत्मविश्वास की वृद्धि होती है। * व्यवसाय चयन की दिशा में अग्रसर होता है। संवाद लेखन विधा से परिचित होता है।	* प्रात्यक्षिक * निरीक्षण * कक्षाकार्य * स्वाध्याय * सहपाठी मूल्यांकन
४.	**लिप्यंतरण –** * गद्य–पद्य पंक्तियों का रोमन लिपि में लेखन करना। * अंग्रेजी पंक्तियों का देवनागरी (हिंदी) लिपि में लेखन करना।	* हिंदी गद्य–पद्य की वाक्य पट्टियाँ * अंग्रेजी की वाक्य पट्टियाँ * अंग्रेजी में सुविचार की पट्टियाँ। * हिंदी गद्य–पद्य पंक्तियों का चार्ट।	* हिंदी गद्य–पद्य पंक्तियों का रोमन लिपि में लिप्यंतरण करने में रुचि लेता है। * अंग्रेजी गद्य–पद्य पंक्तियों का देवनागरी में लिप्यंतरण करता है। * देवनागरी एवं रोमनलिपि की समानता–भिन्नता से अवगत होता है।	* निरीक्षण * कक्षाकार्य * स्वाध्याय * सहपाठी मूल्यांकन
५.	**सांकेतिक चिह्न –** * संगणक की प्रारंभिक जानकारी * मुद्रित शोधन dL / ⁐ – हटाएँ एवं जोड़ें (λ) – बदलें L – अक्षर बदलें (।) – पूर्णविराम चिह्न लगाएँ	* संगणक या संगणक की प्रतिकृति/चित्र * संगणकीय चिह्नों के चित्र एवं नाम के चार्ट। * मुद्रित शोधन चिह्नों के चित्र एवं नाम के चार्ट।	* प्रयोग के माध्यम से संगणक सांकेतिक चिह्नों की जानकारी प्राप्त करता है। * आधुनिक यांत्रिक तकनीक से परिचित होता है। * मुद्रित शोधन के संकेतों एवं उनके अर्थ से अवगत होता है। * जीवन में संगणक/मुद्रित शोधन को व्यवसाय रूप में अपनाने हेतु रुझान बढ़ता है।	* प्रात्यक्षिक * निरीक्षण * कक्षाकार्य * स्वाध्याय * सहपाठी मूल्यांकन * सहपुस्तक कसौटी * प्रकल्प

◉◉◉

अध्ययन–अध्यापन संबंधी निर्देश

१. प्रस्तुत पाठ्यक्रम में दी गई अध्ययन–अध्यापन सामग्री उदाहरण मात्र हैं। शिक्षक विषय–वस्तु के अनुसार यथोचित अन्य सामग्री का भी उपयोग कर सकते हैं।

२. पाठ्यक्रम में प्रतिक्रिया, उपयोजन, व्यावहारिक परिवर्तन के अंतर्गत दिए गए मुद्दे उदाहरण के तौर पर हैं। अपेक्षित वर्तन–परिवर्तन की दृष्टि से अन्य मुद्दों का भी समावेश किया जा सकता है।

३. सतत सर्वंकष मूल्यमापन के अंतर्गत दिए गए साधन–तंत्र महाराष्ट्र राज्य शैक्षणिक संशोधन व प्रशिक्षण परिषद द्वारा दिए गए निर्देशों के अनुसार हैं। संस्था द्वारा प्रकाशित पुस्तिका 'सातत्यपूर्ण सर्वंकष मूल्यमापन भाग १,२,३, के आधार पर दिए गए आठ साधन तंत्रों में से आशय एवं कौशल के अनुरूप उपयोगी साधन तंत्र इस्तेमाल करने के लिए शिक्षक स्वतंत्र हैं।

४. पाठ्यक्रम केकेंद्रीय तत्त्व, जीवनमूल्य, जीवनकौशल, संवैधानिक मूल्य से संबंधित निर्देश उदाहरण मात्र हैं। अपनी सोच, कल्पकता, सृर्जनशीलता के माध्यम से उपर्युक्त बातों में से विदयार्थियों के वयोगटानुसार उनके जीवन में उतारने व संस्कार करने का प्रयास करने के लिए शिक्षक पूरी तरह स्वतंत्र हैं।

५. कक्षा की सभी कृतियों–उपक्रमों में सामान्य, विशेष, असाधारण सभी विद्यार्थियों को यथासंभव सम्मिलित किया जाए।

६. कृतियुक्त, उपक्रमशील शिक्षण प्रक्रिया में शिक्षक की भूमिका सुलभक की है। आवश्यकतानुसार वह अध्ययन में सहायक सिद्ध हों।

७. जिस घटक का कक्षा में अध्ययन–अध्यापन करना हो, उसकी सूचना शिक्षक, विद्यार्थियों को एक दिन पूर्व दें ताकि विद्यार्थी तैयारी के साथ कक्षा में आएँ।

८. बालस्नेही, बालकेंद्रित, कृतियुक्त शिक्षा प्रणाली के अंतर्गत आनंददायी वातावरण में तनावरहित, सहज अध्ययन का अत्यधिक महत्व है। अत: 'लर्निंग टू लर्न / ज्ञानरचनावाद' के द्वारा विद्यार्थियों को स्वयं अध्ययन के अधिक से अधिक अवसर उपलब्ध कराएँ।

९. प्रभावी अध्ययन–अध्यापन के लिए विभिन्न अध्यापन पद्धतियों का इस्तेमाल समय की माँग है। शिक्षक इस दृष्टि से तत्पर रहें। कथाकथन, प्रश्नोत्तर, नाट्यीकरण, गुटचर्चा, सांघिक अध्यापन, प्रयोग, प्रात्यक्षिक आदि अध्यापन पद्धतियों का उपयोग करें।

१०. शिक्षक पाठ्यक्रम के आधार पर भाषाई उद्देश्यों को साध्य करने की दिशा में स्वयं पाठ्यसामग्री तैयार कर सकते हैं।

११. विद्यार्थियों के स्वयंअध्ययन को विशेष महत्व देकर समय–समय पर आवश्यक वातावरण, सूचनाएँ, निर्देश दिए जाएँ।

१२. व्याकरण का अध्ययन–अध्यापन परिभाषा समझाते हुए नहीं बल्कि प्रयोग द्‌वारा क्रियात्मक पद्‌धति से हों ।

१३. व्यावहारिक भाषा सृजन एक प्रकार से व्यवसायोपयोगी सृजन ही है। अनुवाद, व्यावसायिक लेखन, नाट्‌यकला, लिप्यंतरण, सांकेतिक चिह्‌नों को स्तरीय पद्‌धति से पाठ्‌यक्रम में विस्तारित किया गया है ताकि विद्‌यार्थी भविष्य में अपने व्यवसाय के बारे में सोचने के लिए प्रेरित हो। इस संदर्भ में शिक्षक सकारात्मक भूमिका लें।

१४. निर्देशित अध्ययन–अध्यापन सामग्री के अतिरिक्त शिक्षक अपने ढंग से अन्य सामग्री का उपयोग कर सकते हैं।

१५. शिक्षक के पास अपना शब्दकोश तथा संदर्भ ग्रंथ होना आवश्यक है। शब्दकोश देखने की आदत छात्रों में डाली जाएँ ।

१६. शिक्षा में होनेवाले नित नवीन परिवर्तन जैसे सतत सर्वंकष मूल्यमापन, पुनर्रचित अभ्यासक्रम आदि की यथासंभव सूचनाएँ पालकों को भी देना अपेक्षित है।

* **मूल्यांकन संबंधी सामान्य निर्देश**

१) आठवीं कक्षा तक निरंतर सर्वांगीण क्रमिक मूल्यांकन का प्रावधान किया गया है। सभी विद्यार्थियों की गुणवत्ता को विकसित करने पर ध्यान दिया जाए किंतु किसी भी विद्यार्थी को अनुत्तीर्ण नहीं करना है।

२) मूल्यांकन प्रक्रिया में लचीलापन हो। मूल्यांकन की पद्धति, प्रक्रिया में विविधता हो। मूल्यांकन कृतिशील, तनावमुक्त, बालस्नेही, विद्यार्थी केंद्रित हो।

३) मूल्यांकन के सभी स्तरों/प्रकारों का अभिलेख रखने में भी लचीलापन हो। मूल्यांकन संकलित एवं आकारिक दोनो रूपों में करके अंत में श्रेणी का प्रयोग किया जाए।

४) दैनिक अध्ययन–अध्यापन प्रक्रिया में मूल्यांकन को स्थान हो।

५) भाषा विषय के मूल्यांकन में केवल आशय की परीक्षा न लेकर भाषा–कौशलों पर अधिक ध्यान दिया जाए।

६) मूल्यांकन में समन्वित बहुसमावेशित पद्धति को अपनाया जाए। उदाहरणार्थ श्रवण, भाषण–संभाषण, वाचन, लेखन क्रियात्मक व्याकरण, व्यावहारिक सृजन के मूल्यांकन के लिए 'जीवन कौशल' जीवन मूल्य' संबंधी पाठों/पाठ्यांशों का अधिक उपयोग किया जाए।

७) मूल्यांकन प्रक्रिया भयमुक्त, रोचक, प्रेरक आत्मविश्वासवर्धक तथा सर्वांगीण विकास की ओर ले जाने वाली हो। मूल्यांकन के समय छात्रों को निरुत्साहित करनेवाले अपमान व्यंजक शब्दों, टिप्पणियों तथा किसी भी प्रकार की सजा अग्राह्य है। अनौपचारिक मूल्यांकन हो। सुधार के लिए अवसर प्रदान किए जाएँ। तुलना करनी ही हो तो संबंधित छात्र की पूर्व स्थिति के साथ की जाए। अगर पहले की अपेक्षा उसकी तैयारी बेहतर है तो उसका खुले आम उल्लेख कर उसे प्रोत्साहन दिया जाए। भाषा कौशलोंसंबंधी मूल्यांकन करते समय यह भी ध्यान में रखा जाए कि विद्यार्थी किस परिवेश से आया है। आरंभिक कक्षाओं में बोली की शब्दावली, स्थानीय शब्दरूपों को वर्जित न माना जाए। आत्मीयतापूर्वक मानक शब्दों का परिचय कराया जाए।

८) मूल्यांकन में ज्ञानरचनावाद, स्वाध्याय, समस्याओं के निराकरण की क्षमता आदि का भी ध्यान रखा जाए। ये क्षमताएँ न केवल भाषा के संबंध में बल्कि जीवन मूल्यों/कौशलों के क्षेत्र में भी विद्यार्थियों को सक्षम बनाती है।

९) मूल्यांकन इतना व्यापक एवं प्रोत्साहक हो कि छात्रों को अपने बलस्थानों तथा सृजनशक्ति का परिचय हो जाए।

१०) अध्यापक मूल्यांकन की प्रक्रिया में छात्रों से यथासंभव सहायता लें। सहपाठी मूल्यांकन एवं सहपुस्तक कसौटी को महत्व दिया जाए।

११) अध्यापक ऊपर दिए गए निर्देशों के अतिरिक्त मूल्यांकन की अन्य पद्धति, प्रक्रिया तथा साधनों का उचित प्रयोग करें।

टिप्पणी : १) प्रस्तावित पाठ्यक्रम में भाषाई खेल, अध्ययन–अनुभव, मूल्यांकन आदि के संबंध में यथास्थान उदाहरण एवं निर्देश दिए गए हैं। दिए गए उदाहरणों के अतिरिक्त शिक्षकों द्वारा अन्य उदाहरण, भाषाई खेल, अध्ययन अनुभव भी दिए जा सकते हैं।

२) मूल्यांकन के संबंध में विस्तृत निर्देश मूल्यांकन संबंधी मार्गदर्शिका में देखे जा सकते हैं।

उपसंहार

प्रस्तुत पाठ्यक्रम केवल २००४ के पाठ्यक्रम की सीमाओं को ध्यान में रखकर नहीं बनाया गया है। इसकी सबसे बड़ी उपलब्धि यह है कि इसमें शिक्षा नीति, अध्ययन–अध्यापन प्रक्रिया, समाज तथा देश की आवश्यकता आदि के संबंध में एन सी एफ २००५, आरटीई, एस सी एफ २०१० तथा एनसीईआरटी के अंतर्गत दिए गए निर्देशों का कठोरता के साथ पालन किया गया है। परिणामतः यह पाठ्यक्रम अपेक्षाकृत विद्यार्थी केंद्रित, समयानुकूल, व्यवहारोपयोगी तथा विद्यार्थियों के व्यक्तित्व के सर्वांगीण विकास की दृष्टि से बहुआयामी बन गया है। हमें विश्वास है कि यदि पाठ्यपुस्तक निर्मिति, अध्ययन–अध्यापन तथा सर्वांगीण क्रमिक मूल्यांकन आदि सभी स्तरों पर इन निर्देशों का सही रूप में कार्यान्वयन होगा तो हमारे विद्यार्थी आदर्श नागरिक के रूप में जीवन जीने, सफलतापूर्वक जीवनयापन करने तथा किसी भी प्रकार की चुनौती का सामना करने के लिए तैयार होंगे।

⊙⊙⊙